7

# सिद्ध बलिदान और इसके अर्थ

## ( अध्याय 10 )

पाप के लिए बलिदानों का दिया जाना समय के आरम्भ से ही होता रहा है। उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार मनुष्य के इतिहास के आरम्भ में परमेश्वर के सामने बलिदान चढ़ाए थे। फिर मूसा की व्यवस्था ने बलिदानों की शर्त रखी। मूर्तिपूजकों में भी बलिदानों के अपने प्रबन्ध थे। इसलिए बलिदान किए जाने वाले वे सभी पशु, अर्थात हज़ारों हज़ार मेमने और बकरे और बैल, उनसे कितने पाप दूर हुए? इब्रानियों की पुस्तक में दिए गए इस प्रश्न के उत्तर पर ध्यान दें:

> क्योंकि व्यवस्था जिसमें आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। नहीं तो उसका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए कि जब सेवा करने वाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता। परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे (इब्रानियों 10:1-4)।

किसी भी पशु के लहू से एक भी पाप दूर नहीं हुआ! तो फिर लोगों को उद्धार कैसे मिल सका? स्पष्ट है कि पापों को मिटाने के लिए बदिलान दिया जाना आवश्यक है; परन्तु यदि पशुओं का बलिदान उस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाया तो किस बलिदान ने किया?

इब्रानियों 10 अध्याय उस प्रश्न का उत्तर देता है। पशुओं के बलिदानों में त्रुटियां थीं। पवित्र शास्त्र उस सिद्ध बलिदान की बात करता है जिसने उसे पूरा किया जिसे पशुओं के बलिदान नहीं कर पाए, और फिर सिद्ध बलिदान के परिणाम बताता है।

### मसीह हमारा सिद्ध बलिदान है

इब्रानियों 10:1-18 में पुरानी और नई वाचाओं में निर्णायक अन्तर मिलता है। (उस वचन को पढ़ें।) मुख्य अन्तर पुरानी वाचा के ऊपर नई वाचा के बेहतर नियमों या श्रेष्ठ नैतिकताओं का नहीं है। न ही यह पुराने नियम के विपरीत नये नियम में पाए जाने वाले परमेश्वर के अधिक अनुग्रह की तस्वीर है। बल्कि इसे केवल एक आसान बात में देखा जाता है कि *पुरानी वाचा पापों को हटा नहीं पाई परन्तु मसीह के सिद्ध बलिदान के द्वारा नई वाचा पापों को हटा सकती है और हटाती है*। निम्न अवधारणाओं पर ध्यान करें:

*पशुओं के बलिदान पापों को मिटा नहीं पाए, पर मसीह के बलिदान ने मिटा दिया* (10:1-4)। यदि पापों को मिटाने के लिए पशुओं के बलिदान काफ़ी होते तो उनका चढ़ाया

जाना बन्द हो जाता। उन्होंने क्या भलाई हुई? 10:1-4 के अनुसार उन्होंने पापों को स्मरण कराने का काम किया। यह वचन (यह नहीं यह सिखाता कि व्यवस्था के अधीन पाप वर्ष में एक बार ''आगे को टाल दिए जाते'' थे। यह कहना कि पशुओं के बलिदान ''पापों को आगे टाल'' सकते थे उन बलिदानों को पवित्र शास्त्र द्वारा दी गई सामर्थ से अधिक सामर्थ देना है।[1])

*मसीह ने व्यवस्था के बलिदान के प्रबन्ध को मिटा दिया।* भजन संहिता 40 से एक उदाहरण इस बात को साबित करने के लिए सहायता करता है। मसीह ने उन भेंटों को (और व्यवस्था को) हटा दिया और ''वसीयत'' अर्थात नया नियम या नई वाचा को स्थापित किया (10:9)। इस वाचा को स्थापित करने की उसकी सफ़लता का अर्थ है कि हमें पवित्र किया जा सकता है (10:10)।

*मसीह ने एक ही बलिदान के द्वारा इन बातों को पूरा किया* (10:11-14)। आयत 14 दो विचारों पर ज़ोर देती है। पहले तो मसीह ने एक ही बलिदान दिया (व्यवस्था के अधीन दिए जाने वाले कई बलिदानों के विपरीत)। दूसरा उस बलिदान से लाभ लेने वाले लोगों को साल दर साल फिर से याद नहीं कराया जाना था कि वे पापी हैं बल्कि ''सर्वदा के लिए सिद्ध'' कर दिया गया। जो काम व्यवस्था से नहीं हो सका वह मसीह के काम ने कर दिया। पशुओं के बलिदान ''कदापि सिद्ध नहीं कर'' सके (10:1), परन्तु मसीह का लहू कर सकता है।

*हमारे लिए उसके सिद्ध बलिदान का परिणाम हमारे पापों की क्षमा है।* अलग-अलग बलिदानों की चर्चा का चरम 17 और 18 आयतों में मिलता है: ''मैं उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा। और जब उनकी क्षमा हो गई, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।'' पुराने और नये नियम में सबसे नाटकीय अन्तर क्षमा का है। यह क्षमा जो सिद्ध बलिदान के कारण है बार-बार चढ़ाए जाने वाले बलिदानों को अनावश्यक बना देती है। यह तथ्य हमें एक सवाल में ले आता है कि हमारे जीवनों में इस सिद्ध बलिदान का क्या अर्थ होना चाहिए?

## हमारे लिए उस सिद्ध बलिदान के अर्थ

सिद्ध बलिदान के द्वारा शुद्ध किया जाना हमें आशिषें और जिम्मेदारियां दोनों तक लाता है।

### हमारी आशिषें

आशिषें क्या हैं? (पढ़ें इब्रानियों 10:19-21.) वे आशिषें हैं ''यीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव'' (10:19, 20) और ''एक ऐसा महान याजक जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है'' (10:21)। ध्यान दें कि इन आशिषों में से प्रत्येक से पहले ''इसलिए ...'' शब्द आता है। यह जानना कितना अद्भुत है कि हमारी पहुंच पवित्र स्थान तक है और मसीह हमारा महायाजक है!

### हमारी जिम्मेदारियां

हमारी जिम्मेदारियां क्या हैं? इब्रानियों 10:22-25 में हमें वे जिम्मेदारियां मिलती हैं। तीन जिम्मेदारियां इस वचन पाठ में हैं, जिनमें से प्रत्येक से पहले ''आओ ...'' शब्द मिलते हैं।

*''आओ समीप जाएं''* (10:22)। अब हमें ''सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ'' परमेश्वर के समीप जाना (और समीप रहना) आवश्यक है। इसके अलावा हमें आज उसके निकट आने का अधिकार मिला है, क्योंकि कालांतर में हमने ''विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर और अपनी देह को शुद्ध जल से धुलवाया'' था। (अन्य शब्दों में हमने मन फिराकर बपतिस्मा लिया था।) यह बाद की दोनों स्थितियां पूर्णकाल में हैं। वे पिछले कार्य का सुझाव देती हैं जिसके परिणाम वर्तमान में भी महसूस किए जाते हैं। कालांतर में हमने मन फिराकर बपतिस्मा ले लिया था और इसका अर्थ यह है कि अब हम निकट आते रह सकते हैं। हमें परमेश्वर के निकट आते रहना आवश्यक है!

*''दृढ़ता से थामे रहें''* (10:23)। लेखक ने अपने पाठकों से आग्रह किया, ''आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें।'' उन भाइयों की जिनके नाम यह पत्र लिखा गया था, समस्या यह थी कि यह डांवाडोल हो रहे थे यानी उन पर दृढ़ न रहने का खतरा था! आज कुछ लोगों के साथ यही परेशानी है। हमें भी इस संदेश की आवश्यकता है कि मसीह में विश्वास को थामे रखें!

*''एक दूसरे को उकसाएं''* (देखें 10:24, 25)।[2] आज यह वचन हम से क्या करने को कहता है? (1) हम ''एक-दूसरे को उकसाने के ढंग की चिन्ता ... करनी है।'' दूसरों को वह बनने में सहायता के लिए जो उन्हें बनना चाहिए तरीका ढूंढ़ने का प्रयास करना आवश्यक है। (2) हमें ''प्रेम और भले कामों में एक-दूसरे को उकसाना ...'' आवश्यक है। आम तौर पर ''उकसाना'' (''भड़काना''; KJV) नकारात्मक अर्थ में किया जाता है परन्तु यहां इसका इस्तेमाल अच्छे अर्थ में किया गया है। हमें सही काम करने के लिए एक-दूसरे को कुरेदते और आगे करते रहने की आवश्यकता है। (3) हमें एक-दूसरे को ''प्रेम और भले कामों'' में उकसाना आवश्यक है। यह दिलचस्प है कि हमें परमेश्वर के लोगों को ''प्रेम में एक-दूसरे को उकसाने के लिए एक-दूसरे की चिन्ता करने'' को कहा गया है (KJV)। दूसरों को प्रेम के लिए ''उकसाना'' का अर्थ सम्भवतया परमेश्वर और एक-दूसरे के लिए अपने प्रेम को दिखाने का अग्रह करना है।

हम इन कार्यों को कैसे पूरे कर सकते हैं? हम इकट्ठे मिलकर प्रेम और भले कामों में एक-दूसरे को ''उकसाते'' हैं। हमें इकट्ठा होने को नज़रअन्दाज़ नहीं कर देना चाहिए बल्कि इसके बजाय हमें एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रोत्साहित करने का बड़ा तरीका हमारा इकट्ठा मिलना है। प्रोत्साहन या निराशा कलीसिया की सभाओं के किसी व्यक्ति के होने या न होने से मिलती है।

हमें एक-दूसरे को प्रोत्साहित क्यों करना चाहिए? क्योंकि वह दिन ''निकट आ रहा'' है! वह ''दिन'' सम्भवतया न्याय के दिन को कहा गया है। वह समय निकट आ रहा है; पहली सदी में यह स्पष्ट था और आज तो और भी स्पष्ट है।

*इन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए हमारे पास क्या प्रेरणा है?* आशिषों से स्वयं हमें वह प्रेरणा मिलनी चाहिए जो मसीही दायित्वों को पूरा करने के लिए आवश्यक है। परन्तु और प्रेरणा दी गई है। जैसा कि हमने पत्र में पहले देखा था (देखें इब्रानियों 6), प्रतिफल और दण्ड के ढंग का इस्तेमाल किया गया।

(1) *आज्ञा न मानने के परिणाम* (10:26-31)। लेखक ने अपने पाठकों को आज्ञा न मानने के परिणाम बताकर एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने की प्रेरणा देनी चाही। आयतें 26 से 31 हमें पुराने नियम के बलिदानों के प्रबन्ध का स्मरण कराती है, जिसमें ''ऊंचे हाथ'' (देखें निर्गमन 14:8; गिनती 33:3; KJV) अर्थात परमेश्वर के खुले विरोध और अपमान में जान-बूझकर किए गए पापों के लिए बलिदान का कोई उपाय नहीं था। संकेत यह है कि जो बात वहां थी वही नये प्रबन्ध में भी है। यहां हमें एक उत्तम प्रबन्ध का जो आज हमें उपसिद्धांत मिलता है कि यदि हम अपने उत्तम प्रबन्ध की शर्तों को नज़रअन्दाज़ करते या छोड़ते या उनकी अवज्ञा करते हैं तो हम उन लोगों को मिलने वाले दण्ड से भी भयंकर दण्ड के अधिकारी हैं जो पुराने प्रबन्ध में रहते थे।

(2) *आज्ञा मानने के लिए प्रतिफल की प्रतिज्ञा* (10:32-39)। पाठकों को समय और प्रयास को जो उन्होंने मसीहियत में लगाया है बर्बाद न करने के लिए प्रोत्साहित किया गया (10:32-34), बल्कि मसीह के पीछे चलने की प्रतिज्ञाओं और परिणाम को याद रखने (10:35) और अपने आपको विश्वासियों के रूप में देखने (10:36-39) को प्रोत्साहित किया गया।

## सारांश

मसीह का सिद्ध बलिदान हम में से हर किसी के लिए था। वे आशिषें हमारी हैं यदि हम उन्हें ले लें: हम क्षमा अर्थात तम्बू में पहुंच और अपने बड़े महायाजक के रूप में मसीह को पा सकते हैं।

परन्तु उस अन्तिम प्रतिफल का आनन्द लेने के लिए हमें निरन्तर परमेश्वर के निकट आते रहना, मसीह में अपने आज्ञाकारी विश्वास को थामे रखना और प्रेम और भले कामों में दूसरों को उकसाना आवश्यक है। विशेषकर यह काम हम वफ़ादारी से एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होकर कर सकते हैं।

क्या आप परमेश्वर के योजना को मानने में असफल हुए हैं? तो आपके लिए पूर्वानुमान लगाने वाली भयभीत करने वाली बात है। हम सब परमेश्वर के स्नेही हाथों में सुरक्षित रहना पसन्द करेंगे। यदि आप अविश्वासी हैं तो आप परमेश्वर के क्रोध भरे हाथों में जाने के खतरे में हैं। ''जीवते परमेश्वर को हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (10:31)।

---

टिप्पणियां

[1]यदि व्यवस्था के अधीन पाप ''आगे को टाले'' नहीं जाते थे, यदि पशुओं के बलिदान पापों को हटा नहीं सकते थे (10:4), तो व्यवस्था के अधीन लोगों का उद्धार कैसे हो सकता था? इसका उत्तर यह है कि उनका उद्धार मसीह के लहू के द्वारा हुआ! वह लहू पीछे को और आगे को दोनों ओर अर्थात उसके मरने से पहले के किए जाने वाले पापों को और उसके मरने के बाद किए जाने वाले पापों को मिटाने के लिए बहा। उस लहू के द्वारा शुद्ध किए जाने के लिए मसीह से पहले रहने वाले लोगों के लिए व्यवस्था के आज्ञाकारी होना और आज के लोगों के लिए सुसमाचार के आज्ञाकारी होना आवश्यक है। [2]इस पुस्तक में पहले ''इब्रानियों 10:25 पर एक निकट दृष्टि'' शीर्षक से पाठ देखें।